गेंहू अनुसंधान निदेशालय, करनाल का 44वां स्थापना दिवस

गेंहू अनुसंधान निदेशालय, करनाल ने अपना 44वां स्थापना दिवस दिनांक 9सितम्बर 2008 को मनाया। इस अवसर पर निदेशालय में एक कृषि प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें निदेशालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न प्रोद्यौगिकियों तथा उपलब्धियों को दिखाया गया। इस प्रर्दशनी का उद्धाटन इस निदेशालय के परियोजना निदेशक डॉ बी. मिश्र ने किया। डॉ मिश्र ने निदेशालय तथा इसके विभिन्न सहयोगी अनुसंधान केन्द्रों के योगदानों की भूरि–भूरि प्रशंसा की और इस वर्ष गेंहू उत्पादन में आशातीत उपलब्धि (78.4 मिलियन टन) के लिए धन्यवाद दिया। इस प्रदर्शनी में स्थानीय विद्यालयों जैसे दून वैली इंस्टीट्यूट, दयाल सिंह कालेज तथा डीएवी कालेज के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया जिससे वे कृषि अनुसंधान को निकट से जान सकें। डॉ मिश्र ने इस अवसर पर कहा कि देशभर में फैले अखिल भारतीय गेंहू व जौ सुधार परियोजना में 30 पोषित केन्द्रों के 107 वैज्ञानिक तथा 119 अपोषित सहयोगी केन्द्रों के 174 वैज्ञानिक भारतीय कृषि अनुसंधान परिष्द के सहयोग से इस प्रयास में जुटे हुए है कि गेंहू और जौ की उत्पादकता, उत्पादन तथा अच्छी गुणवत्ता वाली किस्मों का विकास होता रहे और भारतीय खाद्य–सुरक्षा सुदृढ़ रहें। निदेशक महोदय ने इस क्षेत्र में गेंहू की उन्नत किस्म डी बी डब्ल्यू 17 को उगाने के लिए काफी जोर दिया। उन्होनें यह भी बताया कि वर्ष 2007–08 में खाद्यान्न की कुल पैदावार 230.67 मिलियन टन हुई जिसमें गेंहू का योगदान 78.40 मिलियन टन है जो 2.83 टन प्रति हैक्टेयर उपज के अनुसार 27.7 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र से आया है। इस वर्ष गेंहू की पैदावार 2006–07 की तुलना में 3.4 प्रतिशत अधिक रहा है। वर्ष 1965–66 को आधार मानकर वर्ष 2007–08 में गेंहू के क्षेत्रफल, उत्पादकता तथा उत्पादन में क्रमशः 121 प्रतिशत, 242 प्रतिशत तथा 654 प्रतिशत की वृद्वि रही है।

वर्ष 2007–08 में गेंहू की सात किस्मों का विमोचन किया गया। हिमाचल और उतराखंड में देर से बुवाई के लिए वी एल 892 तथा वर्षा आधारित क्षेत्रों में अगेती बुवाई के लिए एच पी डब्ल्यू 251 को जारी किया गया। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, राजस्थान (कोटा उदयपुर को छोड़कर), उत्तराखंड के तराई क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश (पोंटा तथा ऊना जिले) में समय से तथा देरी से सिंचित इलाकों में क्रमशः पी. बी. डब्ल्यू 550 तथा डब्ल्यू. एच. 1021 को बुवाई के लिए जारी किया गया। एच. आई. 1544 को मध्य प्रदेश, राजस्थान (कोटा तथा उदयपुर डिविजन) तथा गुजरात में समय से बुवाई के लिए जारी किया गया। एच. डी. 2932 को मध्य प्रदेश, राजस्थान (कोटा तथा उदयपुर डिविजन),गुजरात महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में देर से बुवाई के लिए जारी किया गया। साथ ही एच. आई 8663 (डयूरम) को समय से बुवाई के लिए महाराष्ट्र एंव कर्नाटक के लिए जारी किया गया। गत माह (अगस्त 2008 में) गेंहू की आठ (एच. एस. 490, पी. बी. डब्ल्यू 590, सी. बी. डब्ल्यू. 38, राज 4120, पी. बी. डब्ल्यू 596, यू ए. एस 415, एम. ए. सी. एस. 2971) व जौ की एक किस्म (आर. डी. 2715) को विभिन्न उत्पादन दशाओं के लिए पहचाना गया है।

गेंहू अनुसंधान निदेशालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिष्द के तहत ''ग्लोबल रस्ट इनीशिएटिव'' का सदस्य होकर काला रतुआ की रेस *यूजी 99* को नियंत्रित करने के लिए प्रयासरत है। भारतीय जनन द्रव्यों को केन्या भेजकर कुछयू जी 99 के प्रति प्रतिरोधी किस्में जैसे एम पी 4010, जी डब्ल्यू 322, जी डब्ल्यू 273, एच आई 1500, एच आई 8498 और एच यू डब्ल्यू 510 को पहचान कर उनका करीब 4500 कुं प्रजनक बीज वर्ष 2007–08 में बनाया गया। वैसे भारत में पिछले तीन दशकों से रतुआ की बीमारी का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि हमने गेंहू प्रजनन के द्वारा अपनी किस्मों में रतुआ रोग रोधी जिन्सों को डाला। बीज उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2007–08 में निदेशालय ने राज्य कृषि विश्वविधालयों तथा अन्य सहयोगी केन्द्रों के माध्यम से 26171.23 कुं प्रजनक बीज बनाया । आस्ट्रेलिया में आयोजित अतंर्राष्ट्रीय गेंहू आनुवांशिकी सम्मेलन में भाग लेकर लौटे डॉ मिश्र ने अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे गेंहू अनुसंधान की प्राथमिकताओं तथा मुद्दों का जिक्र किया।

भविष्य में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की मांग को ध्यान में रखते हुए गुणवत्ता की दृष्टि से गेंहू की किस्मों का विकास करना होगा जिससे कि खाद्य प्रसंस्करण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर समुचित ध्यान दिया जा सकें। बिस्कुट तथा अन्य पास्ता उत्पादों की मांग में वृद्धि भूमण्डलीकरण तथा खान पान में बदलती आदतों के कारण संभावित है। धरेलू उपभोक्ताओं तथा उद्योग के लिए बायोअवलेबिटी के द्वारा या बायोफोरटीफीकेशन करके गेंहू में सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ानी होगी । डॉ मिश्र ने यह भी बताया कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर के दो सम्मेलन होने है जिसमें गेंहू से जुड़ी भावी समस्याओं का निराकरण करने हेतु विचार विमर्श होगा।

इस अवसर पर पद्मश्री डॉ जे. बी. चौधरी, पूर्व कुलपति चौ0 चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। उन्होनें कहा कि इस निदेशालय के साथ उनका लंबा सबंध रहा है। उन्होनें नये विज्ञान के साथ–साथ पारम्परिक प्रोद्यौगिकी के सबंध पर जोर दिया । चौधरी रामधन, धनी राम तथा वी एस माथुर के योगदानों को याद करते हुए उन्होनें कहा कि हमें कितनी भी सुविधांए मिल जांए जब तक हमारे अन्दर लगन नहीं होगी हम ऊंचाई को नहीं छू पाएगें। उन्होनें यह भी कहा कि हमारे सामने चुनौतियों बहुत है और उनका सामना करने के लिए हम पूर्ण रूप से सक्षम है तथा कृषि में छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखकर हम उत्पादन को और बढ़ा सकते है।

इस अवसर पर निदेशालय ने उत्कृष्ट कार्यो के लिए तकनीकि वर्ग के कर्मचारी श्री सुरेश कुमार तथा जे0 के0 पाण्डेय, प्रशासन वर्ग के श्री विनोद कुमार व सहायक वर्ग के श्री भीमसिंह व श्रीमती सुमन थापा को वर्ष 2008 के सर्वोत्तम कार्यकर्ता पुरस्कार से सम्मानित किया ।